धर्म जीवन

वार्षिक चन्दा रु. 50/-

अक्तूबर 2008

- बेटे के रहनुमा बनें, रोड़ा नहीं
- श्री देवगुरु भगवान का आविर्भाव
- सभी को गले लगाओ
- नेत्र प्रत्यारोपण
- शुभ संग्राम

बेटे के रहनुमा बनें, रोड़ा नहीं

अब वह जमाना नहीं रहा कि बच्चे बड़े बूढ़ों की सारी बातें आंख मूंद कर मानें। अपनी इज्जत इसी में है कि आप अपने छोटों से कोई बात सोच समझ कर ही कहें। पहले अपने को उन के स्थान पर रख कर देखें कि आप उन की जगह होते तो क्या करते, तब ही कुछ कहें।

आप बड़े हैं तो अपनी आज्ञा को राजाज्ञा न समझें और न ही राजाज्ञा के स्वर में बच्चों से कोई बात कहें, काम बहुत जरूरी है। क्यों? यह अवश्य बताएं। उन के मना करने का कारण भी अवश्य सुनें। फिर खुद भी सोच समझ कर देखें कि आप का बताया गया यह काम उन के काम को कोई नुकसान तो नहीं पहुंचा रहा या उन का काम आप के काम से ज्यादा जरूरी तो नहीं।

बेटे का यदि किसी अच्छी चीज़ में रुझान देखें तो उन का हौसला बढ़ाएं बजाय इस के कि अरे, कहाँ से तुम ने यह करने की सोची। यह तो तुम्हारे वश का नहीं, दूसरों का काम है या यह बेकार का काम है। जैसे छोटे बच्चे का पेंटिंग करना और बड़े का 'योगासन' सीखना। अगर आप के पास मना करने का सही तर्क है तो प्यार से समझाएं कि यह काम क्यों नहीं करो, इस में अमुक खराबी है, इस से यह नुकसान हो सकता है। कोई उदाहरण दे कर भी उन को आप समझा सकते हैं।

बेटे के साथ हर समय व्यर्थ की टोकाटाकी न करें। क्यों देर से लौटे, कहां जा रहे हो। बच्चे को ऐसी तालीम बचपन से ही दें कि वह स्वयं ही बता कर जाना पसंद करे और देर हो जाने पर स्वयं आप के लिए चिंतित हो। "सौरी' भी बोले और उचित कारण भी बताए।

यह क्यों कर रहे हो, वह क्यों कर रहे हो, यह क्या पहन लिया, यह क्या खा रहे हो? इन सब के बदले बच्चों को कभी यूं ही बातों-बातों में सही ज्ञान दें, अपने संस्कारों का, अपने स्वास्थ्य भोजन का, अपने व्यवहार का अथवा अपने पहनावे का। निसदेह बेटा सोच समझ कर आचरण करेगा।

कभी-कभी बेटे की तारीफ भी किया करें। जब भी कोई अच्छी बात दिखे तो मन ही मन खुश न हों बल्कि उन्हें उस के सामने व दूसरों के बीच जाहिर भी करें। उस की पसंद नापसंद का आप भी ख्याल रखें।

* बेटे की जरूरतों को ध्यान में रखें। कभी-कभी उस की जरूरत की चीजों को अपनी क्षमतानुसार कहने से पहले ही ला कर दे दें।
* उस के दोस्तों के बीच अपना डरावना मुखौटा न चढ़ाएं बल्कि सम्मानपूर्ण खुशमिजाज अंकल का खिताब पाएं।
* याद रखें, बेटे की ऊटपटांग हरकतों से यदि बड़ों की बेईज्जती होती है तो बड़ों की हरकत से बेटा भी अपमानित हो सकता है। आप ऐसी कोई भी हरकत न करें, हल्के मजाक, गंदे वक्तव्य, गालियां, गंदे कपड़े, असभ्य आचरण, गप आदि सभी अशोभनीय हैं।

शेष पेज़ 6 पर

धर्म जीवन

खण्ड 20 अंक 10

अक्तूबर 2008

वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

श्री देवगुरु भगवान का आविर्भाव

उनकी आद्वितीय धार्मशिक्षा और उनका मोक्ष और उच्च जीवन विषयक अद्वितीय दान।

1) करोड़ों मनुष्य आत्मा रखकर भी उसके विषय में कोई सत्यज्ञान लाभ करने की इच्छा नहीं रखते। खाने, पीने, सोने जागने, खेलने, कूदने, गप्पें मारने, धन कमाने, जायदाद, इज्ज़त और प्रशंसा वा वाह-वाह लाभ करने और इन्द्रिय आदि सम्बन्धी विविध सुख चाहने और अपने विविध सम्बन्धों में अपनी मूर्खता और अपने मिथ्या विश्वासों और कुसंस्कारों और नाना प्रकार के पापों और अपराधों के द्वारा अपने और औरों के लिये महा भयानक हानियां और दु:ख और केश और उत्पीड़न पहुंचाने के भिन्न और कुछ नहीं करते। इसीलिए जीवनधारी होकर भी अपने अमूल्य जीवन के विषय में अज्ञानी रहते हैं। वह जीवन रखते हैं, पर नहीं जानते, कि जीवन क्या वस्तु है, और वह विश्व के परिवर्तन सम्बन्धी अटल नियम के अधीन होकर किस प्रकार बनता और बिगड़ता है, और किस प्रकार बिगड़ते-बिगड़ते एक दिन बिल्कुल नष्ट हो जाता है, यह ज्ञान उनमें नहीं। वह इस महा आवश्यक ज्ञान से खाली हैं। वह अपने हि अस्तित्व के सम्बन्ध में घोर अंधकार की अवस्था में हैं।

2) ऐसे करोड़ों मनुष्य (जिन में बादशाह और राजे, विद्वान् और मूर्ख, घनी और निर्धन, पुरोहित और पंडित, मौलवी और पादरी, पूज्या और फुंगी, उपदेशक और वायज़ उस्ताद और शगिर्द, शिक्षक और विद्यार्थी, शिल्पी और कृषक, दुकानदार और व्यापारी, बैरिस्टर और वकील, जज और मजिस्ट्रेट, डाक्टर और इंजीनियर, गवर्नर और हाकिम आदि सब प्रकार के लोग शामिल हैं) जो कुछ आत्मा के विषय में एक वा दूसरे प्रकार की प्रचलित कहानियों पर विश्वास करते हैं, वह सब प्राकृतिक नियम और सत्य के विरूद्ध होने के कारण मिथ्या कल्पना के भिन्न और कुछ नहीं। इसीलिए उनके द्वारा केवल यही नहीं, कि उनका अपना अथवा जनसमाज वा साधारण जनों वा पशु आदि का कोई प्रकृत हित नहीं होता, और नहीं हो सकता, किन्तु नाना प्रकार से अहित होता है। भांत-भांत के कल्पित धर्ममत रखकर और अपने-अपने मत की डींग मारकर ऐसे सब लोग अपने-अपने जीवनों की अवस्था से अपने मत की किसी और मत की अपेक्षा कोई श्रेष्ठता प्रमाणित नहीं कर सकते। किन्तु इसके

विपरीत परस्पर द्वेष और मिथ्या पक्षपात और ईर्षा और अहंकार आदि से परिचालित होकर एक वा दूसरे के लिये विविध प्रकार से अत्यन्त हानिकारक प्रमाणित होते हैं। कल्पना-मूलक मिथ्या विश्वास जैसे जुदा-जुदा और नाना प्रकार के होते हैं, वैसे ही वह महा हानिकारक भी होते हैं।

3) मनुष्य आत्मा के साथ धर्म का सम्बन्ध है। इसलिये जब तक मनुष्य आत्मा के विषय में किसी को सच्चा ज्ञान प्राप्त न हो, तब तक उसे धर्म का सच्चा ज्ञान भी नहीं हो सकता और वह केवल मिथ्या कल्पना की वस्तु रहता है।

4) मनुष्य आत्मा के सम्बन्ध में जो कितने हि मिथ्या और कल्पित विश्वास इस पृथिवी में फैले हुए हैं, वह यह हैं। यथा :-

1) वह (मनुष्यात्मा) सच्चिदानन्द स्वरूप पूर्ण ब्रह्म है। माया के संग मिलकर जीव बन गया है।

2) वह ईश्वर का रूप अथवा अंश वा "हुक्म" है।

3) वह ईश्वर का रचा हुआ और उसकी सन्तान है।

4) वह अविनाशी है और अनादि काल से है।

5) उसकी उत्पत्ति तो है, परन्तु उसका विनाश नहीं है।

6) "कयामत" वा इन्साफ के नियत दिन में वह खुदा की अदालत में हाज़िर किया जायगा। वह अपने कर्मों का इनाम वा दंड पाएगा। उस दिन से वह हमेशा के लिए स्वर्ग वा नरक में रहेगा और उसकी हालत में कोई तबदीली न आएगी।

7) इन्साफ का नियत दिन कोई नहीं। वह अपने स्थूल शरीर के छोड़ने पर परमेश्वर के पास जाकर अपने कर्मों के अनुसार या, तो कुछ काल स्वर्ग में रहता है, और या इस पृथिवी के आकर कभी मनुष्य, कभी पशु और कभी वृक्ष आदि बनता है।

8) वह शरीर के मरने पर खुद भी हमेशा के लिए मर जाता है, और उसका कुछ बाकी नहीं रहता। इत्यादि, इत्यादि, इत्यादि।

इतनी भिन्न-भिन्न 2 कल्पनायें क्यों? इसीलिए कि श्री देवगुरु भगवान् से पहले कोई मनुष्य इस पृथिवी में मनुष्यतत्व को वैज्ञानिक विधि के अनुसार खोजने और मालूम करने के योग्य नहीं हुआ और नहीं हो सकता था; क्योंकि एक ओर जैसे वह काल वैज्ञानिक काल न था, दूसरी ओर श्री देव गुरु भगवान ऐसे अपूर्व तत्वज्ञान के लाभ करने के उपयोगी जिन विशेष शक्तियों को लेकर जन्मे, वह शक्तियां भी किसी में वर्तमान नहीं थी। इसीलिए प्राचीन काल में आत्मा तो एक ओर सूर्य, चन्द्र, पृथिवी आदि जड़ पदार्थों के सम्बन्ध में भी नाना प्रकार के मिथ्या विश्वास कल्पना किए गए थे, कि जो बहुत से लोगों में अब तक भी जारी हैं।

श्री देवगुरु भगवान् ने मनुष्य आत्मा के सम्बन्ध में जिन वैज्ञानिक तत्वों को जाना और प्रकाश किया है, वह यह है :-

1) विश्व के मूल भूत (जड़ पदार्थ) और उस की भूत शक्तियां सदा से हैं और सदा रहती हैं। जैसे मनुष्य का शरीर भौतिक जगत् के जड़ पदार्थ अर्थात् आक्सीजन, हाईड्रोजन और कार्बन आदि को लेकर विकसित हुआ है, उसी प्रकार उसका आत्मा उस जीवनीशक्तियों से विकसित हुआ है, कि जो टीन और चान्दी आदि जड पदार्थों में पाई

जाती है। इसी शक्ति ने गठनकारी अवस्था को प्राप्त होकर विविध प्रकार के उडिद्, पशु और मनुष्य आकारों की सृष्टि की है।

2) गठनकारी जीवनीशक्ति हि अपने आकार के अनुकूल गठन घड़ती है; वही उसका पालन करती है; वहीउसे जीवित रखती है और वही उसके सदृश और आकार उत्पन्न करती है; और एक से बहुत प्रकार की बन जाती है।

3) यह जीवनीशक्ति उसी प्रकार अपना गठन प्राप्त (Organized) रूप रखती है, जिस प्रकार उसको भौतिक आकार वा शरीर।

4) जिस प्रकार अनुकूल वा प्रतिकूल सम्बन्धों में पड़कर शरीर बनता वा बिगड़ता है, उसी प्रकार आत्मा भी अपनी विविध शक्तियों में परिवर्तन लाभ करके बनता वा बिगड़ता है। अर्थात् यह दोनों हि विश्व के और सब पदार्थों की न्याईं अपने अनुकूल वा प्रतिकूल सम्बन्धों (Environment) के अनुसार नीच वा उच्च परिवर्तन लाभ करते हैं, और विश्व के विकास वा विनाशकारी अटल नियमों के सर्वदा अधीन रहते हैं।

5) जैसे मनुष्य का शरीर प्रतिकूल सम्बन्धों में पड़कर रोगी हो जाता है, और रोगी होकर अपने सौन्दर्य और पराक्रम को खोता जाता है; और यदि यह सिलसिला बराबर जारी रहे, तो एक दिन बिल्कुल नष्ट हो जाता है; उसी प्रकार उसका आत्मा भी प्रतिकूल सम्बन्धों में पड़कर दिनों दिन नीच बनता है और इस नीचता के अनुसार अपने सौन्दर्य और बल को खोता जाता है। और यदि यही सिलसिला जारी रहे, तो एक दिन इसी लोक वा अधर्म लोक वा परलोक में मूल से हि नष्ट हो जाता है।

6) जैसे किसी शारीरिक रोग को दूर करने वा उसकी पालना के लिए किसी ईश्वर वा देवता आदि के विश्वास की आवश्यकता नहीं; उसी प्रकार आत्मा को नीचगति वा विनाश से बचाने के लिए उपरोक्त प्रकार के किसी कल्पित विश्वास की आवश्यकता नहीं।

7) जैसे शारीरिक रोग के दूर करने में सुविज्ञ चिकित्सक और औषधि से सहाय मिलती है, उसी प्रकार आत्मा को अपने जीवन के सम्बन्ध में अज्ञानता, कल्पित विश्वास, मोह और पाप सम्बन्धी नीचगतिदायक अवस्था से मोक्ष पाने के लिए जीवनविद्याविशारद आत्मा से सहाय प्राप्त हो सकती है। और जैसे बच्चे को अपने शरीर की रक्षा और उन्नति के पथ में मां के शरीर से सहाय मिलती है, उसी प्रकार आत्मा को अपने जीवन की रक्षा और उसके विकाश के लिए उच्च जीवनधारी आत्मा से सहाय मिल सकती है।

8) अपनी नीच गति जनक प्रत्येक अवस्था का ज्ञान और बोध लाभ करके उससे और उस के दुःख से मोक्ष पाने और उच्च जीवन सम्बन्धी नाना अंगों को लाभ करके, विश्व के प्रत्येक विभाग के साथ विकास के नियम के साथ एकता स्थापन करके अमर जीवन और परमहित और परमानन्द लाभ करने के योग्य बनना ही मनुष्य आत्मा का एक मात्र सच्चा और मुख्य लक्ष्य है।

5) इन विज्ञान-मूलक सच्चे महातत्वों को प्रकाश करके श्री देवगुरु भगवान मनुष्यमात्र के लिए जिस सत्य और विज्ञान मूलक धर्म की शिक्षा देते हैं उसी का नाम देवधर्म है।

6) इन विज्ञान मूलक महातत्वों का महा

कल्याणकारी ज्ञान लाभ करके उन्होंने मज़हबी दुनियां की सारी काया पलट दी है, और वह इस पृथिवी के सब कल्पितमतों में (1) सृष्टि और सृष्टा (2) स्वर्ग और नरक (3) परलोक (4) इन्साफ और कयामत (5) पूजा वा ईबादत (6) तीर्थ और व्रत (7) भजन और कीर्तन (8) जप और पाठ (9) योग और समाधि (10) देवी और देवते (11) मोक्ष और निर्वाण (12) पाप और पुण्य और उनके फलों आदि नाना विषयों के सम्बन्ध में जो मिथ्या विश्वास पाए जाते हैं, उनकी असलियत जाहर करके उनके सम्बन्ध में विज्ञान-मूलक सत्यशिक्षा प्रदान करते हैं।

7) यह सह शिक्षा ऐसे सब स्त्री पुरूषों को दी जाती है, कि जो अपने सच्चे हित की आकांक्षा रखते हों, और अहंकारी और मिथ्या पक्षपाती (मुतास्सिब) न हों, श्रद्धा और दीनता के साथ किसी तत्व को सीखकर उस पर युक्ति पूर्वक विचार कर सकते हों। ऐसे सैंकड़ों अधिकारी जनोंने उनसे इस प्रकार की शिक्षा विषयक ज्योति लाभ करके अपने अन्धकार को दूर किया है।

8) इस महा हितकर और अमूल्य शिक्षा के भिन्न सैंकड़ों आत्माओं ने उनकी शरण लेकर और उनकी धर्मशक्तियों का दान पाकर अपनी-अपनी योग्यता के अनुसार नाना प्रकार के पापों से इसी पृथिवी में सच्ची मोक्ष अथवा इससे भी बढ़कर उच्चगति दायक अनुरागों को पाकर उच्चजीवन में विकास लाभ किया है।

---

2 पेज़ का बाकी

* बेटे के उद्देश्य में पैसे के अलावा आप अपने ज्ञान से, अपने संपर्कों से उन की मदद कर सकते हैं अथवा करवा सकते हैं।
* ज्यादा न बोलें, कम बोलें, जो भी कहें वह तथ्यपूर्ण हो।
* बात-बात पर नसीहत न झाड़ें, बोर न करें, उपदेश का सही मौका देखें तो ही अपनी बात संक्षेप में प्रभावशाली ढंग से कहें।
* बेटे के दोस्त बनें ताकि वह आप से कुछ भी सलाह लेने में हिच-किचाए नहीं, जिस से उस का मार्गदर्शन करने में आप सहायक बन सकें।
* याद रखें, आप का जमाना नहीं है। बेटे का जमाना है तो उसे दुनिया के साथ कदम बढ़ाकर तरक्की करने दें। ताकि वह जग में उपहास का पात्र न बने जैसे बेटे को अपने फैशन के छोटे-छोटे बाल, ढीली-ढाली पैंट के लिए मजबूर न करें। बल्कि केवल अश्लीलता और असभ्यता से दूर रहने के लिए प्रेरित करें।

संस्कार अच्छे दे कर नींव मजबूत की है न आप ने। फिर डर कैसा? पढ़ने या काम के सिलसिले में जरूरी है तो रोकें नहीं, बेटा जैसे उचित समझता है करने दें। हाँ, उस पर नज़र के साथ-साथ विश्वास भी रखें क्योंकि आप की दी हुई शिक्षा से वह आप का सिर कभी नीचा नहीं होने देगा।

इस तरह आप कर सकें तो अपने बेटे की रहनुमाई करेंगे, उस की तरक्की की राह में रोड़ा नहीं बनेंगे।

सत्य धर्म बोध उत्सव

प्रत्येक वर्ष की तरह इस वर्ष भी सता धर्म बोध उत्सव का शुभ अवसर 12 सितम्बर से 14 सितम्बर 2008 को रखा गया। इस उत्सव का पता वा नोटिस मासिक पत्रिकाओं वा हित स्त्रोत और धर्म जीवन के द्वारा दिया गया। कुछ सेवकों को निमंत्रण पत्र भी भेजे गए।

उत्सव से पहले 7 सितम्बर से 11 सितम्बर तक प्राय: हररोज़ सभा का प्रोग्राम रखा गया, जो 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ (मंत्री देव धर्म मिशन का निवास) में रखा गया, जहां ईतवार की सभा की जाती है। यह सभाएं, एक सभा को छोड़कर, श्रीमान बलदेव सिंह जी ने करवाई।

उत्सव के लिए हमेशा की तरह श्रीमती शुभवती धर्मशाला सैक्टर 18-डी, चण्डीगढ़ के मेहरबान प्रबन्ध का पूरा सहयोग प्राप्त था। धर्मशाला के सामने का ऊपर का सारा विंग उत्सव मनाने के लिए प्राप्त था। इसकी सफाई, सभा स्थान की सफाई, सजावट, बिछाई का पूरा काम बहुत मेहनत से श्रीमान जगदीष जी ने किया। बहुत शानदार हाल सभाओं के लिए हमेशा की तरह तैयार किया गया।

यात्रियों के भोजन के लिए 3 जनों को रखा गया। सारा राशन, सब्जियां आदि जगदीष जी ने ही खरीदी। पेपर पलेटस और गिलास काफी संख्या में खरीदे गए। गैस, सलैंडर, बाल्टियों का प्रबन्ध किया गया। यह सारा संग्राम श्रीमान जगदीष जी ही करते रहे।

गुरु महाराज के अर्चन के लिए सुन्दर हारों का प्रबन्ध किया गया। सब सभाओं में भजनों का गान भी श्रीमान जगदीष जी ही अच्छे भावों से भरकर करते रहे।

उत्सव में शामिल होने के लिए यू. पी. हरियाणा, गुजरात, पंजाब, राजस्थान, दिल्ली आदि नीचे लिखे स्थानों से यात्री पहुँचे। देहरादून, मेरठ, खतौली, दिल्ली, अमृतसर, लुधियाना, गोनियाना, मंडी, संगरूर, जंडवाला, थराजवाला, गुरूहरसाय, राएपुर रानी, केसूपुर, समराला, मोहाली, चण्डीगढ़ दड़वा, पंचकूला, यमुनानगर, फरीदाबाद, मलेका, गुजरात, पदमपुर आदि-आदि।

सभाओं में अधिकारी जनों की अच्छी हाजरी रही। 65-70 के लगभग हाजरी होती रही।

सभाए श्रीमान बलदेव सिंह जी, श्रीमान बलबहादुर सिंह जी, श्रीमान डाक्टर विनोदचन्द्र जी खेड़ा ने करवाई। सभाएं बहुत अच्छे स्तर की और प्रभावशाल होती रही। सुन्दर दृष्य वा मण्डल बनता रहा। श्रीमान ओम प्रकाश जी आर्दश अपने सुन्दर गीत प्रस्तुत करते रहे।

किताबों की छोटी स्टाल भी रखी गई। श्रीमान वर्मा जी और साथी इसमें सेवाकारी होते रहे।

पूजनीय भगवान की बड़ी छवि शोभयामान थी। देव वाणी के सुन्दर माटोज़ और उच्च धर्म सम्बन्धियों की फोटोज़ सुन्दर ढंग से सजाए गए। सफेद चादरें बिछाई गई। एक सभा की वीडियो भी बनाई गई।

सभाओं का संक्षेप हाल नीचे दिया जा रहा है: -

प्रवेश सभा :- 12 सितम्बर 2008, समय : 5.00 बजे शाम

सभापति:- श्रीमान बलबहादुर सिंह जी

सभा का दूसरा घण्टा बजनेपर श्रीमान जगदीष जी ने श्रद्धा भाव से भरकर "हमारे पूजनीय सत्गुरु जी

तुम हो धन्य" तुम हो धन्य नामक भजन का गान किया। धर्म सम्बन्धी इसमें योग देकर पाक खुशी से भर रहे थे।

उसके बाद गुरु महाराज की सुन्दर छवि का सभापति जी और जगदीष जी ने अर्चन किया।

फिर देव स्त्रोत का समूह गान वा भावपूर्ण व्याख्या की गई। फिर दूसरे भजन "देवो ज्योति-देवो जीवन" का प्रार्थना विषयक भजन गाया गया। फिर सभापति जी ने अपना ब्यान आरम्भ किया।

हमने अपनी हस्ती वा वजूद को जानना है। उसको बढ़िया बनाना है, जिन्दगी में सबसे श्रेष्ठ काम यह है।

परन्तु इसके लिए कुछ नियम पूरे करने हैं। जैसे सेहत के निमय है, यदि वह हम पूरे करते हैं, तो सेहत बनती है, परन्तु हम केवल शरीर नहीं, हम आत्मा भी हैं। आत्मा को जानना अवश्यक है।

किसी प्रकार का नाम जप कर आत्मा का कोई भला नहीं होता। दूध और सल्फास एक चीज़ नहीं एक सेहत देती है, दूसरी मौत। इसलिए दूध का सेवन और सलफास से परहेज आवश्यक है।

हमारी आत्मा हमारी जान है, जीवनी शक्ति है हमारी हस्ती में इससे बढ़कर कोई चीज़ नहीं। यह है, तो हम हैं, कोई राजपाठ, धन दौलत, पुत्र पानी इसके मुकाबले में हेच हैं, क्योंकि यदि हमारी जान ही नहीं तो सब कुछ निरर्थक है। इसकी होश पानी है, इसकी जाग्रति वा सोझी परम आवश्यक है।

इसकी सोझी देने का काम कहीं संसार में नहीं हो रहा। केवल यह छोटा सा निराला उत्सव है, जो यह सोझी देने के लिए मनाया जा रहा है। इस निराले उत्सव से लाभ उठाने के लिए आप लोग पधारे हैं। मैं आप सबका अपनी तरफ से वा देव धर्म के प्रबन्ध की ओर से दिल से स्वागत करता हूँ। (खड़े होकर) खुशी प्रगट करता हूँ और धन्यवाद देता हूँ।

यह छोटी से सच्ची धर्म समाज है, जो धर्म की सोझी वा आत्मा की होश देती है। आत्मा का ज्ञान ही धर्म का ज्ञान है। आत्मा का भला करना ही धर्म है।

खुशी की बात है श्रीमान तेजराम जी ने पिछले उत्सव पर प्रेरणा ली और अपने बच्चों को कहकर दुकानों से सब नशे वाली चीजें बेचनी बन्द कर दी। इस पर सबने खुशी का इज़हार किया।

सभापति जी ने बताया कि मेरे परिवार ने इस दर से बहुत लाभ उठाया है। अपने पाप भरे, शराबी, कबाबी और हुल्लड़ बाजी करने वाले जीवन का ब्यान किया। इस दर पर आकर वह चला गया। उन्होंने बताया कि किस प्रकार पिता का अफीम खाना और दादा जी का अण्डे खाना चला गया।

श्रद्धेय श्रीमान धर्मबल जी की कथा सुनाई। किस प्रकार उन्होंने मार सहकर, कोठड़ी में बन्द किए जाने पर भी रिश्वत लेना स्वीकार नहीं किया। आखिर पिता को अपनी घृणित तस्वीर नज़र आई, महोत्सव के अवसर पर बेबस अपने बेटे के पावों में पगड़ी रख दी और क्षमा याचना की।

यह दर हमें मिथ्या और पाप के जीवन से मुक्त करता है। जिससे हमारी आत्मा सुन्दर वा नेक बनती है।

श्रीमान गज सिंह जी को गुरू महाराज ने प्रणाम करना सिखाया। उन्होंने अपनी उपकारी माता के सम्बन्ध में अपने भयानक जीवन का ब्यान किया और बताया कि इस सम्बन्ध में उनका कितना भला हुआ है।

सभाओं से लाभ उठाने के नियम हैं, उनका सभापति जी ने ब्यान किया। समय पर सभा में आज के बाद, सेवक पीली पगड़ी पहनकर आएं, गुण चिन्तन करना, निन्दा चुगली से बचना। पाठ, भजन, साधन करके अपना भला करना, इस प्रकार वातावरण शुद्ध रखना है।

सभापति जी ने ब्यान के बाद सैक्रेटरी साहिब ने सब यात्रियों का, विशेष रूप से श्रीमती विद्यावती जी खेड़ा का जो 92 वर्ष की उमर में पधारी, का स्वागत वा धन्यवाद किया। फिर बताया कि देव धर्म के समागम वा अन्य समागमों में क्या अन्तर है। हमें यहां ज्योति मिलती है, जो हमारी नीचता को दिखाती है और तेज मिलता है, जो नीचता से निकलने का बल देता है। यह काम और कहीं नहीं हो रहा और कोई कर भी नहीं रहा। और न कर सकता है। धर्म ग्रन्थों को 131 वर्ष से बेचने वाला परिवार कई किलो हिरोइन (नशे) धर्म पोथियों में भेजते हुए पकड़े गए। यह निराला दर है, इससे लाभ उठाने की आवश्यकता है। अगले दिन के प्रोग्राम का ऐलान करके और जय ध्वनि के साथ यह प्रोग्राम खत्म हुआ। यह सभा 2 घण्टे तक चली और अच्छी प्रभावदायक थी।

13.09.2008, प्रातः 8.00 बजे

सभा परिचालक – माननीय श्रीमान बलदेव सिंह जी भजन अद्वितीय है रूप तुम्हारा जन समाज में हे भगवान्।

आत्म-अबोधता उसकी हानियां, आत्म-बोध व उसके लाभ।।

शुभकामना :– हम मनुष्यात्मा सुखों के बोधी, दास हैं। पर देवात्मा शुभ, सत्य के बोधी व अनुरागी हैं। मनुष्यात्मा नीचता वा मिथ्या (झूठ) के दास हैं। आत्म बोध तो बहुत ऊँची बात है; हां पाप-बोध भी कठिन है।

II. भजन :– मुझको मेरा बोध कराओ बार-बार यह लक्ष्य दिखाकर, तुम (अंधकार) से मोहे ऊपर ले जाओ।

1) मनुष्य के विकास क्रम में देवात्मा एक नई हस्ती पैदा हुए हैं।

2) हम कलंकित जीव हैं, जैसे :- धन के, स्वाद के, सैक्स के, तन सुख आदि नीच भावों के बंधुए, दास हैं। अपनी वा दूसरों की हानि करने को विवश हैं।

3) सभी धर्मों में यह नुक्स है कि वो आत्मा का स्वरूप, रोग नहीं देख सकते।

4) आत्मा का घटना, बढ़ना नहीं देख सकते। यथा आत्मा के परिवर्तन का बोध ही आत्म बोध है।

5) हम (मनुष्य) केवल शरीर के पुजारी हैं। हमारा, हमारी समाज, या हमारे देश का नाश आत्मा का लक्ष्य नहीं है। हमें आत्मा का वा सत्य धर्म का ज्ञान बोध नहीं है।

आत्मा के बोध के चार लक्षण हैं :–

1) आत्मा की हानि, पतन नाश का बोध।

2) आत्म दुर्बलता, क्षीण व मलिनता का बोध यथा धीरे-धीरे जो हानि हो रही है, उसका बोध।

3) आत्मा को परिवर्तित करने वाली शक्तियों का बोध।

4) नीच भाव कितने घट रहे या बढ़ रहे हैं, उसका बोध, आत्मा के प्रकृत परिवर्तन का बोध ही आत्म बोध है। "मैं" के बढ़ने के ज्ञान से आत्म बोध पूर्ण होता है। अपने घमंड वा नीच घृणा का बोध ही आत्म-बोध है। श्रद्धा बढ़ रही है या घट रही है, आत्म बोध से ज्ञात होता इसमें प्रत्येक नीच गति से मौत अनुभव होती है। प्रत्येक पाप, मिथ्या की नीच गतियां, दुष्चिन्ताओं का बोध ही आत्म बोध है।।

आत्म बोध न होने की हानियां :–

1) आत्मा के रोगों को प्यार करता है।

2) न घर-परिवार, न मान-इज्जत, न धन शेष रहता है।

3) अपने जीवन में कोई कमी नज़र नहीं आती है।

4) अपनी कमी बताने पर घृणा करेगा, कृतज्ञ, करज़ाई, अनुभव नहीं करेगा।

5) हितैषी को शत्रु; और (आत्म) शत्रु को हितैषी समझेगा।

6) महापुरुषों की भी पहचान नहीं होगी।

7) अपना/अपनों का नाश तथा दूसरों का भी नाश करता रहेगा। होगी हितकारियों को शक्ल ना पसन्द। खुशी से दुश्मनों के घर जाऐंगे आदि-आदि।

13.09.2008 – 10.00 बजे

सभापति – श्रीमान बलबहादुर सिंह जी

विषय – हितकर आदेशों का पाठ और व्याख्या।

सभापति जी ने हितकर आदेशों का पाठ करना और व्याख्या करनी आरम्भ की।

उन्होंने बताया कि हम केवल शरीर नहीं, आत्मा भी हैं। जैसे सब पदार्थ दो चीजों से बने हैं, हमारा अस्तित्व भी 2 पदार्थों से ही बना है। शरीर और जीवनी शक्ति।

बेजान शक्ति भौतिक जगत से विकसित होकर आगे उभ्दिद वा पशु जगत में विकसित होते हुए। आत्मा के रूप में विकसित हुई।

पशुओं और मनुष्यों में कई पहलुओं में समानता है। सब खुराक खाते हैं हवा, पानी पर जीते हैं सब वनस्पति जगत से खुराक लेते हैं, परन्तु मनुष्यों में उन्नतिशील मान्सिक शक्तियों के कारण उसमें सभ्यता, भाषा का विकास हुआ है। आत्मा ही माता के गर्भ में हमारा शरीर निर्माण करती है। माता पिता के अलग-अलग सैलों के मेल से एक नई जान की उत्पत्ति होती है। नई जान निर्माणकारी गुण रखती है। मनुष्य की जीवनी शक्ति मनुष्य का ही शरीर बनाती है। हमारे पूर्वजों से हमें जिस प्रकार के जीनज़ प्राप्त होते हैं, उसके अनुसार ही मनुष्य की शारीरिक, मानसिक वा हार्दिक विकास होता है।

हम सब जगतों से जुड़े हुए है, उन पर निर्भर करते हैं। हवा, पानी, सूरज, वनस्पति जगत, पशु जगत और मनुष्य जगत हमारे जीवन के आधार हैं। नेचर विशाल वा असीम है। हम उसके छोटे से अंश हैं। हम चारों जगतों की सेवा करके ही जिन्दा रह सकते हैं। यदि शरीर के लिए हाथ काम न करें, तो वह सूख जाते हैं। नेचर के विकास कार्य में काम आने से ही उसका अंश बचता है और विकसित होता है।

हम सूरज हवा पानी, पौधों, पशुओं और अन्य मनुष्यों से जुड़े हुए हैं। इसलिए कहा जाता है कि Ecology Balance या पर्यावरण खराब न करो। Global Warming से बचो। यह प्रमाणित किया गया है कि हफ्ते में एक बार मास न खाने से पर्यावरण में बेहतरी आती है।

नीच वा उच्च गतियों के सम्बन्ध में ज्ञान :–

आत्म मोक्ष और विकास के सम्बन्ध में ज्ञान :–

मोक्ष और विकास हमारे जीवन का लक्ष्य है। उच्च गतियों वा उच्च भावों का विकास, किसी भी नीच भाव से मोक्ष पाना हमारा लक्ष्य है। हम गुमराह है। इसका संग्राम होना अवश्यक है।

जिसके भीतर नीच भाव से बचने की इच्छा नहीं, वह मोक्ष कैसे पाएगा।

आत्मा के भीतर उच्च गति दायक शक्तियों की विकसित होने से ही मोक्ष सम्भव है। विकास सम्भव है। एक उच्च भाव को बढ़ाएंगे तो दूसरा नीच भाव घटेगा। उच्च जीवन से बढ़कर कोई लाभ नहीं। नीच जीवन से बढ़कर कोई हानि नहीं।

किसी भी उपकारी के लिए घृणा और द्वेष की आग से बचो, नहीं तो सर्वनाश हो जायेगा।

अपने अपराध और पाप के विषय में रोकने टोकने पर उल्ट पुल्ट होने से बचना है।

कैसी भी भयानक अवस्था हो, आत्म-घात

से बचना है और हमेशा बचना है।

सभापति जी ने बड़े सुन्दर और सरल शब्दों में आदेशों की व्याख्या की। हाजरीन को समझाने का पूरा यत्न किया, अधिकारी जनों ने अवश्य कुछ न कुछ योग्यतानुसार लाभ उठाया।

शाम की सभा का समय बताया और जय ध्वनि के साथ सभा समाप्त हुई।

13.09.2008

सभापति – श्रीमान विनोद जी खेड़ा

भजन – "हे सत्य शिव सुन्दर ब्रतधारी"

विषय – भगवान देवात्मा के देव प्रभावों का अद्वितीय कारजे।

मेरे श्रद्धेय दादा जी का नाम श्रीमान देव बल जी था। मेरे पड़नाना जी श्रीमान डाक्टर श्री राम जी था। समाज में आने से पहले वह 34 वर्ष तक दयाल बाग के अनुयायी रहे थे। गुरु के कहने पर कि कुछ मांगो, तो गुरू से ही 5000 रू० मांग लिए। दो रू० भेंट करने के स्थान पर एक रू० थाली में इस तरह फैंकते कि दो रू० लगें। मां बिमार होने पर उन्हें सस्ती दवाईयां देते, आखिर मां ने कहा कि पैसे मुझसे ले लो, परन्तु दवाई तो अच्छी दो। भाई ने मां के लिए रू० भेजे, आधे आप रख लिए। कोकीन बेचकर मकान बनवाए। हरिद्वार से गीता चुरा ली। देव समाज में आकर 2 मकान दान कर दिए। उनकी धर्म पत्नी ने अपने जेवर दान कर दिए। मोह बन्धन में बुरी तरह फंसे हुए थे। बच्चों के साथ लेकर बाज़ार जाते थे। स्वाद अनुराग के कारण बवासीर हो गई। दिल के दौरे का खतरा था। घमंड के कारण अपनी पत्नी की मार पीट और गाली गलौच करते थे। बहुत ईमानदार, बहुत सेवाकारी, वफादार और नेक पत्नी थी। माता 14 – 15 वर्ष चारपाई पर पड़ी रही, पत्नी ने उनकी खूब सेवा की। पति के छोटे भाई–बहनों के मल–मूत्र तक साफ किए। विधवाओं और गरीबों की मदद करती रहती थी। देव समाज में आकर छुआछूत चली गई। मुसलमान के हाथ के बने चावल खाने के लिए सबसे पहले तैयार हो गई। एक मेहतरानी के बच्चे को रेल में अपनी गोद में बिठा लिया।

मेरे श्रद्धेय दादा जी 1887 में देव समाज में आए। पहले मांसाहारी थे, एक दम शाकाहारी बन गए। किसी जानवर पर जुल्म होता देखकर दिल पर छुरीयां चलती थी। पहले अपने स्वार्थ के लिए मारे–मारे फिरते थे। सोलन में रेल पर जाते हुए, बहुत भीड़ थी। लोग प्यास से व्याकुल थे, उनके लिए पानी का प्रबन्ध किया। विश्वासी थे।

जब परम पूज्नीय भगवान देवात्मा ने श्री दविन्द्र नाथ जी टैगोर के पास ईश्वर के विश्वास के विषय में पुस्तक देखी, तो उन्होंने वह पुस्तक मंगवा ली, देवात्मा ने ईश्वर विश्वास छोड़ दिया। दादा जी की श्रद्धा ने उन पर पूर्ण विश्वास किया। कई चाचा, ताया के बच्चे मांसाहारी बने। एक चाचा के बेटे को किसी ने गोली मार दी। मेरा क्या हाल होता, यह अनुमान नहीं लगाया जा सकता।

श्रीमान बलदेव सिंह जी :– सिगरेट, शराब द्वारा मृत्यु के आंकड़े छपते हैं, परन्तु नौजवान कोई ध्यान नहीं देते। नेचर ने विकास क्रम में देवात्मा को ऐसा रूप देकर आर्विभूत किया है, कि वह शुभ का राज लाएं और पाप को मि।टाने का बीड़ा उठाएं। देवात्मा मिथ्या पाप से निष्कलंक हैं।

नारकी घराना बदल गया :– श्रीमान मदन मोहन लाल, जिन्होंने मां को बहुत घृणित शब्द कहे, सम्मान और सेवा के साधन करने लगे। श्रीमान सुच्चा सिंह जी नम्बरदार (कल्याण) का जीवन परिवर्तन सुनाया। श्रीमान जी ने अपने वा श्रीमान बलबहादुर जी के परिवर्तन की ओर ईशारा किया। श्रीमान कंवर दविन्द्र सिंह जी के जीवन की ईमानदारी की घटना सुनाई। इस प्रकार यह सभा समाप्त हुई।

14.09.2008 ईतवार – समय सुबह 8.00 बजे

विषय :– परम पूजनीय भगवान देवात्मा का नीच जीवन मिटाने और उच्च जीवन पैदा करने का अनोखा कारज।

सभापति :– श्रीमान बलबहादुर सिंह जी। पहले एक भजन का गान हुआ। फिर देव स्तोत्र का गान और व्याख्या की गई। फिर बहुत हार्दिक भावों से सभापति जी ने सहाय प्रार्थना की।

फिर एक भजन के बाद सभापति जी ने फरमाया :- यह घड़ी रोशनी से ही दिखाई देती है। सूरज को सूरज की रोशनी में ही देख सकते हैं। यह भौतिक दुनिया का नियम है।

आत्मिक दुनिया की सचाईयां देखने के लिए हमें आत्मिक रोशनी की आवश्यकता है। यह आत्मिक दुनिया का नियम है।

देवात्मा शुभ अनुरागी है। मनुष्य जगत सुख अनुरागी है। अन्तर केवल दो चार किलो या मनों का नहीं। ईंचों और फुटों का भी नहीं, अन्तर श्रेणी का है। वह मनुष्य श्रेणी नहीं, देव श्रेणी है।

हम नीच सुखों के दास, सत्य अनुराग की दुनिया देख नहीं सकते, शुभ अनुराग की दुनिया नहीं देख सकते। हमें तो अपना आप भी सही नज़र नहीं आता। जो कुछ नज़र आता है, उल्टा नज़र आता है। हम सब समझते हैं कि हम सुन्दर हैं, अच्छे हैं, ठीक हैं, निर्दोष हैं। परन्तु ऐसा कभी बहुत कम होता है। साधारणत: हम दुष्ट, नीच वा मलिन ही होते हैं।

कनल जी फरमाया करते थे कि मनुष्य को यदि देवात्मा की रोशनी में अपना प्रकृत रूप नज़र आ जावे, तो रोता चुप न हो कि वह कैसा घमंडी, स्वार्थी, नीच, दुष्ट, मलिन वा पापी है।

नेचर में अभी ऐसी कोई विधि नहीं जिसके द्वारा हमारी, नीच चिन्ताओं वा गतियों की प्रकृत फोटो ली जा सके। हमारा जीवन गन्दे चीथड़ों की गेंद की तरह है। देवात्मा की ज्योति में यह क्षमता है कि गेंद की लीरों को दिखाती है।

मेरे एक भाई ने कहा कि मेरे बच्चे सुख के सके हैं, मैंने कहा कि हम सब ही सुख के सके हैं, परन्तु दिखाई नहीं देता। उन्हें मेरी बात समझ नहीं आई, ऊपर से ही निकल गई।

मैं थोड़ा सा पढ़ गया कि अपने आपको कुछ का कुछ देखने लगा। जिन्होंने पाला-पोसा, पढ़ाया, खर्च किया, सभी प्रकार की कुबार्नियां की, मुझे बनाया, वह मुझे मूर्ख और उजडड् नज़र आने लगे। मैं कहां इन उजड्डों के घर पैदा हो गया? कोई होश न सोझी वा शिष्टता थी। कनल जी की अपने एम. ए. पास होने पर उनकी आखें भर गई, उन्हें किसान, पशु-पौधे, डाक्टर, इंजीनियर सब उपकारी याद आ गए, जिनके कारण वह एम. ए. पास हुए परन्तु हम अन्धों को नज़र नहीं आता। हम दूसरों की मेहरबानियों का नतीजा हैं। यह देव प्रभाव अर्थात् देव ज्योति और तेज इतने कल्याणकारी और हितकारी हैं कि इनकी तुलना किसी भी पदार्थ से नहीं हो सकती। राजे, महाराजे, गरीब, अमीर, बच्चों, बूढ़ों सबको इनकी आवश्यकता है।

मैं अपने स्कूल में अपनी साथी अध्यापिका से पूछता था कि कितनी तनख्वाह है, वह बताती कि 20, 25 हजार मिलती है। मैं पूछता कि माता-पिता जिन्होंने टीचर बनाया है, उनको आपने कभी कोई भेंट दी है, तो वह जवाब देती कि नहीं, माता-पिता से तो लेते हैं। नीच जीवन धारी को तो यह बातें समझ में नहीं आतीं। इन्सान कहता है कि मेरे अधिकार यहां रख दो। लेने की जरूरत तो महसूस करता है, स्वार्थ की कैद में हमारी दुनिया बहुत छोटी रह जाती है। अन्धेरे से भर जाती है। नीच जीवन का अन्धकार बहुत विस्तृत है। जीवन सिंह, चतुर सिंह, धार्मिक ग्रन्थों के प्रकाशक और विक्रेतार्थ थे। उन्होंने धार्मिक

गुटकों में 5 किलों हीरोईन दूसरे देशों को भेज दी जो 25 करोड़ की कीमत की होगी। 130 वर्ष से धार्मिक ग्रन्थों के Publisher होकर भी स्वार्थ के अन्धेरे में कुछ नज़र नहीं आया। नीच जीवन, नीच सुख अनुरागों की उपज है। प्रश्न उठता है कि नीच जीवन क्या होता है? सिगरेट पीना, शराब पीना, नशे प्रयोग करना, चोरी करना, रिश्वत लेना अपनी या दूसरों की किसी प्रकार की भी हानि करना नीच जीवन है।

सन् 1958 में डाक्टर मनसा सिंह जी ने डाक्टर बनाने वाले उपकारी को थोड़ा सा कर्ज़ा सूद पर रदिया, और वह भी किसी और के नाम से डाक्टर साहिब बहुत माननीय है, 12-14 धर्मों में जाकर शिक्षा पाई है, मगर अपनी इस नीचता का पता नहीं लगा। कृतज्ञता का भाव न था। धर्मों में रहकर भी नीच रहे। कृतघ्न बनें। जितने नीच भाव हैं, उतने ही हम नीच बनते हैं। हम अंह अनुरागी और स्वार्थी हैं। अपने मतलब के यार हैं। स्वार्थ हमारा सबसे बड़ा सम्बन्धी बन गया है। स्वार्थ रखकर हम नीच बनते हैं। जीवन का नाश करते हैं। देवात्मा स्वार्थ की काल कोठड़ी की कैद से निकालते हैं। हमें तो माता-पिता तक नज़र नहीं आते। स्वार्थ की कैद में दूसरा कोई नज़र नहीं आता। देवात्मा की रोशनी में यह अन्धेरा कुछ-कुछ योग्यतानुसार दूर होने लगता है। अपनी नीचता वा स्वार्थ कुछ-कुछ नज़र आने लगती हैं।

हम कुछ विद्यार्थी इंग्लिश के प्रोफेसर साहिब के साथ इकट्ठे कमरे में रहते थे, पर हमें वह नज़र नहीं आए। हमने उन्हें कोई बड़ा नहीं समझा। उन्हें कोई सम्मान नहीं दिया। उनका कोई छोटा-मोटा काम करने की रुचि नहीं दिखाई, बल्कि अपमान ही किया, आखिर वह हमें छोड़कर, अलग रहने के लिए चले गए। अपने आपको हम कुछ का कुछ समझते थे।

मैं अपने को अब कहता हूँ कि तुम्हारी औकात यह है कि, तुम शराबी हो, कबाबी हो, माता पिता पर जुल्म करके उनकी कमाई शराब, सिनेमा और खाने पीने पर खर्च करने वाले हो। यह देवात्मा की रोशनी ने दिखाया है। माता पिता का सुन्दर रूप दिखाया है। अपना नीच रूप नज़र आने लगा है। माता-पिता महान, अच्छे और उपकारी नज़र आते रहे हैं। बहुत परिवर्तन आया है, इतना अन्तर आ गया है कि अब वह विशेष नज़र आने लगे हैं। वह ऋषि है। बहुत ऊँचे और अच्छे हैं। बहुत महान हैं। उनके चरणों में सिर झुकाना है, उनका हाथ बंटाना है। दुख घटाना है, सेवा करनी है।

हमने बड़े-बड़े अनर्थ किए हुए हैं, मगर नज़र नहीं आते। मैंने ज़ोर से गुस्से से मां की ताड़ना की और झिड़का और उन्हें बस अड्डे पर जाने नहीं दिया। मां रो रही थी, वापिस घर में चली गई, मां जननी है, बड़ी मेहरबान हैं। मानव संसार में माँ जैसा कोई उपकारी नहीं, उनको सुख पहुँचाने की, ईलाज करवाने की, सेवा करने की कोशिश की है, मगर जितने शुद्ध और उच्च भावों से करना चाहिए था, उसमें बेहद कमी रही है। अब दुखी होने के सिवा और कोई चारा नहीं।

उसको नहीं देखा हमने कभी, और इसकी जरूरत क्या होगी। ऐ मां तेरी सूरत से अलग, भगवान की सूरत क्या होगी। अब फटकार पड़ती है, ऐ पागल। निर्लज्ज, ऐ कृतघ्न, तू इसलिए जन्मा था, रो रहा हूँ।

शराब का जीवन, स्वार्थ का जीवन, अंहकार का जीवन, नीच जीवन है। "देना" धर्म है, लेने का नाम धर्म नहीं। भाई से शराब के नशे से बचने के लिए गहरे प्यार और दिली भावों से भीख मांगी और इसके बदले अपनी जान भी हाज़िर कर दी। भाई ने भीख दे दी। घर में स्वर्ग आ गया, ऐसा लगता था जैसे भाई ने मुझे मोल ले लिया हो। भाई की जरूरत के लिए अपना मोहाली का पलाट बेच कर दे दिया, अपना वायदा पूरा

किया अगर देवात्मा के दर पर न आता तो 10 रु० भी न देता। आपस में काट-काट कर मरते। नीच जीवन के दरिया में वह रहा था, डूब रहा था। उसको हाथ देकर निकाला है। इस जगह रोशनी मिलती है, उसका आदर करो और बरकतें मिलेंगी और निरादर से फिर वही जहन्नुम में चले जाओगे। देव ज्योति और देव तेज बेहद कदर की वस्तु हैं। धन, सेहत और किसी का भी निरादर करो वह फिर नहीं मिलेगी। देवात्मा यक्ता हैं और उनके देव प्रभाव यक्ता हैं, यह नीच जीवन दिखाते हैं, घटाते हैं और उच्च जीवन बढ़ाते हैं। एक जेठानी ने नीच जीवन के कारण देवरानी के दहेज को आग लगाई थी, वह सभा में नज़र आया और स्वीकार करने के लिए मजबूर हो गई और देव प्रभावों ने उससे बहुत सुन्दर परिशोध करवाया। नीच जीवन को मिटाना मामूली बात नहीं। एक-एक जगह अमृत पान करके भी कुछ भी नीच जीवन नज़र नहीं आता और न खत्म होता है। एक बहन ने सभा में महसूस किया कि मैं छोटी बहन के दहेज को देखकर जलती थी और मन-मन में कहती थी कि अगर बारिश आ जाए और सारा दहेज़ खराब हो जाए, तो मुझे शान्ति मिले।

भाई ने भाई की पत्नी को दूध की बाल्टी ले जाते देख लिया तो सोचा कि भाई की भैंस को सांप लड़ जाए, तो वह हमारे जैसा हो जाए, तब मुझे शान्ति मिले।

धन का प्यार झूठा, कातिल और चोर बनाता है। आलस्य, स्वाद, मोह बन्धन, रिश्वत लेना, धोखा देना सब स्वार्थ का जीवन, नीच जीवन है। करे कराए आप, मानस के कुछ नहीं हाथ, यह ठीक नहीं। अरे, इस दर पर आओ, यह नीच जीवन मिटाने का दर है उच्च जीवन पैदा करने का दर है।

मुलाज़िम सब लेने के यार हैं, अब 24,000 के जगह वेतन 32000 हो जाएगा, मगर फर्ज़ में बेहतरी नहीं आएगी।

मैं स्कूल में तनख्वाह के अनुसार काम नहीं करता था, गुरु महाराज के प्रभावों ने मुझे खाली पीरियड में भी बच्चों को पढ़ाने लगा दिया। स्कूल लगने से पहले और छुट्टी के बाद भी पढ़ाता था। कई साथी व्यंग्य कसते थे कि आपने स्टेट अवार्ड लेना है। मैं कहता था कि मैं मुफ्त खोरा रहा हूँ, कुछ परिशोध करना है। गुरु महाराज ने मेरी नई दुनिया बनाई है।

अलम वांग यूनान दे बादशाह दे,
सुनसुना के हो गुमराह नाहिं,
आबे हयात दे कुण्ड ते पहुँच के तू,
बिना पीतियां उठके जा नहीं।

देवात्मा के प्रभाव आबे हयात हैं :- यह जीवन की नीचता हरते हैं और उच्च जीवन प्रदान करते हैं।

यह सभा बहुत प्रभावशाली थी, क्या सभापति क्या कई अधिकारी हृदय बहुत पिघल रहे थे, गुरु महाराज के चरणों में झुक रहे थे। धन्यवाद के भावों से भर रहे थे।

धन और जन की अपील

इस सभा के बाद श्रीमान बलदेव सिंह जी ने भरे दिल से गुरु महाराज की महानता और उनके अद्वितीय कारज का वर्णन करते हुए इस निराले कारज के लिए धन और जन की अपील की, जिसके रिस्पौंस में 50,000 रू० के करीब दान प्राप्त हुआ। कुछ जनों ने सत्संग में आकर लाभ उठाने के वायदे किए।

भाव प्रकाश

श्रीमान महा सिंह जी :- जब भी श्रीमान जी सभा वा सत्संग के लिए कहेंगे आया करूंगा। पहले जीवन भेंट किया था, अब भी भेंट ही है। मैं घर में रहकर नीच जीवन में डूबता जा रहा हूँ। माता जी को तंग करता हूँ।

श्रीमान ओम प्रकाश जी :– दो बार वर्ष में प्रचार पार्टी के साथ जाने की प्रतिज्ञा करता हूँ।

श्रीमान जगजीत सिंह जी :– मेरे मन में यह तड़प थी कि इस बार पूरा समय दूंगा। श्रीमान जी ने स्वयं पहुँचकर प्रेरणा दी। सभाओं में अपनी तरफ ध्यान गया है। मैं अब बच्चों की ओर से free हूँ। मैं अब ज्यादा समय सत्संग में लगाना चाहता हूँ। स्वार्थ की समझ गहरी हुई है। मुझे जो आत्म बल मिला है, वह गुरु की देन है। मेरे कुछ साथी परलोक चले गए। मेरे पिता जी के यह कहने पर कि तुम खेत को जाओ तो यह जवाब दिया कि "तुम्हारे खेत जाएं भाड़ को, मैंने तो कॉलेज जाना है। मैंने माता पिता का बहुत अपमान किया है। पिता जी की सेवा करने का संकल्प करता हूँ। मैं जैसी सेवा चाहता था, नहीं कर सका पिता जी मेरा बदला रूप देखकर यह कहते थे कि जिस समाज के साथ जुड़ा हुआ है, जुड़े रहना। यह क्रैडिट गुरु को जाता है। मेरी धर्म पत्नी ने बड़ा साथ दिया है। उनका बड़ा उपकार महसूस हो रहा है। मेरे ऊपर आर्थिक संकट आ गया, उन्होंने 40 तोले सोना मेरे हवाले कर दिया। और भी अनेकों गुणों की मालिक थी। बेटियों की शादियों में शराब, मांस नहीं दिया। और भी आत्मिक बल के लिए प्रार्थना करता हूँ।

श्रीमान रजिन्द्र कुमार जी :– मुझे ज्यादा कुछ पता नहीं, मुझे तो प्रतिज्ञाओं का भी पता नहीं था। धीमान साहिब का धन्यवादी हूँ। नशे चले गए, आमदनी बढ़ गई, मैं क्या से क्या बन गया। अच्छी संगत अच्छी लगती है। चाहे कितना खर्च हो, सत्संग में पहुँचूंगा।

श्रीमान बूटा सिंह जी :– मैं अपनी पत्नी को गुस्से से बोल जाता हूँ। मैं बचने की कोशिश करता हूँ। जब कोई घर में बात होती है तो मैं गुमसुम होकर बाहर निकल जाता हूँ। मैं झूठ बोल जाता हूँ। उससे बचने की कोशिश करूंगा। मेरा बेटा शराब पीता है, उसकी tension रहती है। यहां तक कि आत्म-घात करने को मन करता है, परन्तु यहां आकर समझ आया है कि आत्म हत्या के विषय में कभी नहीं सोचना।

श्रीमान तेजराम जी गुजरात :– 13 वर्ष बाद इस उत्सव पर आया हूँ। और सत्संगों में शामिल होता रहा हूँ। मैं गुरु कारज काम करता भी रहा मेरी कमजोरी है कि मैं बच्चों को नहीं ला सका। वह नेक हैं, परन्तु नशे कर लेते हैं। अपनी तड़प बच्चों तक पहुँचाऊंगा, आत्मिक बल के लिए गुरु महाराज से प्रार्थना करता हूँ।

श्रीमान सुभाष जी :– माता पिता का धन्यवादी हूँ कि जिन्होंने इस दर से जोड़ दिया। बच्चों को इस बार नहीं ला सका, इसका दुख है। आगे से अवश्य लाऊंगा।

श्रीमान जागीर सिंह जी :– श्रीमान सुखदेव सिंह जी, श्रीमान बलदेव सिंह जी और उपकारियों का शुक्रगुज़ार हूँ? इस उत्सव से यह काम हुआ है कि मैंने मनमुखता से धर्म सम्बन्धियों को दुखी किया है (रो रोकर) बच्चों को मारता था। मेरी आत्मा काफी बिमार है। मेरी उच्च घृणा बढ़ रही है नशों के प्रति, अश्लीलता के प्रति भी। मुझे गुरु महाराज ने आत्मघात से बचाया है। मैं नीच संगत से बचूंगा।

श्रीमती भजन कौर जी :– एक भाई तो इस दर से जुड़कर बहुत अच्छे बन गए हैं, परन्तु दूसरा नशई बन गया, उसका और बच्चों का क्या बनेगा।

इसके बाद बिहार फंड के लिए प्रेरणा की गई। इसके बाद देव आरती का गाान करके चार बार जय ध्वनि के साथ इस उत्सव का प्रोग्राम सम्पन्न हुआ।

सभी को गले लगाओ

किसी को मत सताओ, सभी को गले लगाओ।

कार के बम्पर पर लगा स्टिकर ली शैपिरो रिटायर्ड जज हैं। वे उन गिने-चुने लोगों में से हैं, जो इंसानों को सच्चा प्यार करने के लिए जाने जाते हैं। ली के करिअर में एक मोड़ आया, जब उन्हें यह एहसास हो गया कि प्रेम ही दुनिया की सबसे बड़ी ताकत है। परिणाम यह हुआ कि ली सबको गले लगाने लगे। वे हर एक के सामने गले मिलने का प्रस्ताव रखने लगे। उनके सहयोगियों ने उन्हें, 'गले लगाने वाला जज' कहना शुरू कर दिया (गले से लटकाने का हुक्म देने वाले जज के ठीक विपरीत)। उनकी कार के बम्पर पर लगे स्टिकर पर लिखा है, 'किसी को मत सताओ, सभी को गले लगाओ।'

लगभग छह साल पहले ली ने एक विशेष किट तैयार की, जिसके डिब्बे पर लिखा हुआ है 'गले लगाने वाले दिल।' इस डिब्बे के भीतर तीस छोटे-छोटे लाल दिल के स्टिकर हैं। ली अपनी फिट को लेकर लोगों से गले मिलते हैं और इसके बाद उन्हें तोहफे में एक छोटा सा लाल दिल न दे देते हैं।

ली इस बात के लिए इतने मशहूर हो चुके हैं कि उन्हें अक्सर बड़े-बड़े सम्मेलनों में बुलाया जाता है, जहां वे बिना शर्त के प्रेम का संदेश देते हैं। सैन फ्रांसिस्को में हुए एक सम्मेलन में अखबार वालें ने उन्हें चुनौती देते हुए कहा, 'सम्मेलन में लोगों को गले लगाना आसान है, क्योंकि वे लोग अपनी मर्जी ये यहां आए हैं, लेकिन असली दुनिया में आपका यह तरीका कभी सफल नहीं हो सकता।'

उन्होंने ली को चुनौती दी कि वे सैन फ्रांसिस्को की सड़कों पर लोगों को गले लगाकर दिखाएं। जब ली ने यह चुनौती स्वीकार कर ली और सड़क पर चलने लगे, तो स्थानीय न्यूज चैनल की टेलीविजन टीम रिकॉर्डिंग करने के लिए उनके पीछे-पीछे चलने लगे। ली ने सबसे पहले पास से गुजरने वाली एक महिला को रोका। वे बोले, 'हाय, मैं गले लगाने वाला जज ली शैपिरो हूँ। मैं गले मिलने के बदले में ये दिल दे रहा हूँ। क्या आप गले मिलना चाहेंगी?' उस महिला ने हंसकर जवाब दिया, हां, हां, क्यों नहीं?' स्थानीय पत्रकार बोले, 'यह तो बहुत आसान था।' ली ने चारों तरफ देखा। उन्हें यातायात पुलिस की एक बेहद परेशान लड़की दिखी, जो एक कार मालिक को गलत पार्किंग करने के लिए चालान की रसीद दे रही थी और कार मालिक उसे बुरा-भला कह रहा था ली शैपिरो टेलीविजन कैमरे की टीम के सामने उस लड़की के पास जाकर बोले, 'आप बहुत परेशान दिख रही हैं। ऐसा लगता है कि गले मिलने से आपको शांति मिल सकती है। मैं गले लगाने वाला जज हूँ और मैं आपको गले लगाना चाहता हूँ।' उस लड़की ने भी गले मिलने के प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया।

टेलीविजन टीम ने ली को आखिरी चुनौती दी। देखिए, बस स्टॉप पर बस रूकने वाली है। सैन फ्रांसिस्को के बस ड्राइवर सबसे सख्त, बदमिजाज और चिड़चिड़े होते हैं। आप इस बस ड्राइवर को गले लगाकर बताएं तो जानें।' ली ने यह चुनौती भी स्वीकार कर ली।

जब बस स्टॉप पर बस रुकी, तो ली ने ड्राइवर से कहा, 'हाय, मैं गले लगाने वाला जज ली शैपिरो हूं।

आपका काम बहुत तनाव भरा है। दुनिया में इतना तनावपूर्ण काम शायद दूसरा नहीं होगा। मैं लोगों का तनाव कम करने के लिए उन्हें गले लगा रहा हूँ। क्या आप मुझसे गले मिलना चाहेंगे?' छह फुट दो इंच लंबा और 230 पौंड वजन वाला बस ड्राइवर अपनी सीट से उतरा और बोला, क्यों नहीं?

ली ने उसे लगे लगाया, तोहफे में एक दिल दिया और बस में जाते समय ड्राइवर की तरफ हाथ हिलाया। टेलीविजन टीम की बोलती बंद हो गई। आखिर कमेंटेटर ने कहा, 'मुझे आपका लोहा मानना पड़ेगा। मैं सचमुच आपसे बहुत प्रभावित हूँ।'

एक दिन ली की मित्र नैन्सी जॉन्स्टन उनके घर आई। नैन्सी एक हास्य कलाकार हैं और वे अपनी प्रस्तुति वाली पोशाक और मेकअप में थी। उन्होंने ली से कहा, आप अपनी गले लगाने वाली किट रखलें। हम गंभीर मानसिक रोगियों के आश्रम में जाना है।'

जब वे उस आश्रम में पहुंचे, तो उन्होंने मानसिक रोगियों को गले लगाया और उन्हें गुब्बारों वाले हैट तथा लाल दिल के तोहफे दिए। ली असहज महसूस कर रहे थे। वे पहले कभी ऐसे लोगों के गले नहीं मिले थे, जो मानसिक रूप से बहुत कमजोर थे और जो इतनी बुरी तरह बिमार थे कि उनकी मौत निश्चित थी। उन्हें इन लोगों से गले मिलने के लिए काफी कोशिश करनी पड़ी, लेकिन कुछ समय बाद यह काम आसान हो गया, क्योंकि नैन्सी और ली के पीछे-पीछे डॉक्टरों, नर्सों और अर्दलियों का काफिला भी चलने लगा। वे एक वार्ड से दूसरे वार्ड तक जाकर रोगियों से गले मिलते रहे।

कई घंटे बाद वे आखिरी वार्ड में घुसे। वहां पर 34 रोगी थे। ली ने पहले कभी इतने गंभीर रोगी नहीं देखे थे। वे अंदर से टूट गए, लेकिन प्रेम बांटने और सकारात्मक परिवर्तन करने के संकल्प के कारण नैन्सी और ली रोगियों को गले लगाने लगे। उनके साथ मेडिकल स्टाफ था, जिसमें से हर एक के कॉलर पर दिल और सिर पर गुब्बारों वाले हैट लगे हुए थे।

आखिरकार ली सबसे आखिरी रोगी लियोनार्ड के पास पहुँचे। लियोनार्ड एक बड़ी सफेद बिब बांधे था, जिस पर उसकी लार लगातार गिर रही थी। ली ने यह देखकर कहा, 'अब यहां से चलते हैं, नैन्सी। हम इसके दिल तक तो किसी हालत में नहीं पहुंच सकते।' नैन्सी ने जवाब दिया, 'ठहरो ली। वह भी तो एक इंसान है, है ना?' फिर नैन्सी ने लियोनार्ड के सिर पर गुब्बारे वाला हैट रख दिया। ली ने एक छोटा लाल दिल उठाकर लियोनार्ड की बिब पर बांध दिया। इसके बाद ली ने एक गहरी सांस ली और लियोनार्ड के गले लगा लिया।

अचानक लियोनार्ड चीखने लगा, 'ईईईईईईई! ईईईईईईई!' कमरे के कुछ और रोगी भी चीखने लगे। ली ने स्टाफ की तरफ देखा, ताकि उन्हें पता चल जाए कि आखिर हुआ क्या था उसने देखा कि हर डॉक्टर, नर्स और अर्दली की आंखों में आंसू छलछला रहे थे। ली ने प्रमुख नर्स से पूछा, 'आखिर हुआ क्या है?' उस नर्स का जवाब ली को जिंदगी भर याद रहेगा '23 साल में हमने आज पहली बार लियोनार्ड को मुस्कुराते देखा है।'

दूसरों की जिंदगी में सकारात्मक परिवर्तन करना कितना आसान है।

नेत्र प्रत्यारोपण

आँखें हैं तो जहान है वरना हर तरफ अंधेरा है। इनसान के जीवन में नेत्रदान का क्या महत्त्व होता है यह आप उस नेत्रहीन से पूछ कर देखिए जिसे किसी ने अपनी आंखे दान में दी हैं। इसीलिए कहा गया है कि नेत्रदान एक मानवीय वरदान है।

नेत्र प्रत्यारोपण से मतलब पूरे गोलक का प्रत्यारोपण नहीं वरन आँखों में स्थित कोर्निया (स्वच्छ पटल) के प्रत्यारोपण से है। नेत्र प्रत्यारोपण उन में ही किया जाता है जो कोर्निया की खराबी से दृष्टिहीन हैं, अत: इसे जानने के लिए कोर्निया की बनावट को जानना जरूरी है।

कोर्निया :– आँख के अंदर का गोल हिस्सा एक टेबल टेनिस की गेंद के आकार की सरंचना है। इस के अग्र भाग में एक पारदर्शी गोल भाग होता है, यही स्वच्छ पटल पुतली या कोर्निया कहलाता है। यह क्षेत्र गोलक का छठा हिस्सा बनता है इस पारदर्शी रचना में रक्तवाहिनियों का अभाव रहता है। यह कांच जैसी रचना है जो अपना भरणपोषण आंखों में स्थित द्रव से करती है। यह मात्र चवन्नी के आकार की गोलाकार रचना है जो चारों ओर श्वेत पटल से जुड़ी रहती है। चूंकि कोर्निया आँख की सतह से उभरा रहता है अत: यह (कोर्निया) उभरी हुई रचना है। दूसरे शब्दों में, घड़ी के डायल के आगे लगे शीशे जैसी ही यह भी रचना है। जब यह शीशा रूपी कोर्निया क्षतिग्रस्त हो कर धुंधला हो जाता है तो व्यक्ति को धुंधला दिखने लगता है और इसे ही कोर्निया की अंधता कहते हैं।

कोर्निया से अंधता

इस के निम्न प्रमुख कारण है:

* आंखों पर चोट लगना।
* कुपोषण से कोर्निया पर फुल्ली बन जाना, विशेष कर विटामिन 'ए' की कमी से कोर्निया का नष्ट हो जाना।
* आँखों में विभिन्न तरह के संक्रमण।
* आतिशबाजी करते हुए आंखों का जल या फट जाना।
* कोर्निया का रसायनों से जल जाना।
* आँखों की जन्मजात विकृति होना।

कोर्निया प्रत्यारोपण

व्यक्ति के मृत्यु के बाद यदि उस ने अपने नेत्र दान किए हैं तो उस की दोनों आँखों के गोलक सामान्य शल्यक्रिया द्वारा सुरक्षित निकल दिए जाते हैं और कोल्ड चैन के माध्यम से इन्हें संग्रह कर लिया जाता है। मृत व्यक्ति का चेहरा किसी भी तरह से विकृत नहीं होता। क्योंकि आपरेशन के बाद उस में कृत्रिम नेत्र डाल दिए जाते हैं। इन संग्रहीत नेत्र गोलकों को सीधे नेत्र बैंक पहुँचा दिया जाता है, जो किसी जरूरतमंद व्यक्ति को लगा दिए जाते हैं।

दृष्टिहीन व्यक्ति के क्षतिग्रस्त कोर्निया को ऑपरेशन के द्वारा निकाल दिया जाता है और उस के स्थान पर साफ पारदर्शी कोर्निया को, जो नेत्रदानकर्त्ता के नेत्र गोलक पर लगा होता है, को शल्यक्रिया द्वारा निकाल कर रोगी के कोर्निया के स्थान पर लगा दिया जाता है। कोर्निया में कोई रक्तवाहिनी नहीं होती है

तथा अपना भरणपोषण वह नेत्र के कक्ष में स्थित द्रव, जो रिसरिस कर कोर्निया को ऊर्जा और आक्सीजन प्रदान करता है, से करता है।

किसी भी व्यक्ति का कोर्निया किसी को भी लगाया जा सकता है क्योंकि इनसान का शरीर किसी भी इनसान के कोर्निया को ग्रहण कर सकता है। इस तरह के ऑपरेशन को केरेटोप्लास्टी कहते हैं।

सरल शब्दों में आप इसे यों भी समझ सकते हैं कि कोर्निया प्रत्यारोपण का अर्थ है, जैसे घड़ी के डायल के ऊपर स्थित खराब और धुंधले शीशे को हटा कर उस के स्थान पर पारदर्शी साफ नया शीशा लगा देना।

कोर्निया मृत्यु के 6 घंटे के अंदर ही सूखने लगता है। अत: नेत्रदानकर्त्ता की मृत्यु के 6 घंटे के भीतर ही नेत्रदान करा कर गोलक निकाल लिए जाते हैं। इस के बाद नेत्र बैंक में 24 घंटे के अंदर उचित व्यक्ति को इसे प्रत्यारोपित कर दिया जाता है। इस से एक नेत्रदानकर्त्ता से 2 अंधे व्यक्तियों को आँखों की रोशनी मिलती है। अत: हमें नेत्रदान का संकल्प लेना चाहिए।

शुभ संग्राम

10 सितम्बर को श्रीमान बलदेव सिंह जी लुधियाना जगजीत सिंह जी को मिले। उनको और आदर्श जी को सत्य धर्म बोध उत्सव पर समय पर पहुंचने की प्रेरणा की उन्होंने भी उत्साह दिखाया।

शाम को श्रीमान जी मोगा पहुँचे। वहां श्रीमान मुंशी राम जी (लोहे वाले) को उनकी इच्छानुसार मिले। उन्होंने श्रीमान जी को बहुत सन्मान दिया, मासिक पत्र के लिए धन्यवाद देते नहीं थकते थे। 200 रूपये दान में दिए और महोत्सव पर और दान देने की इच्छा प्रगट की।

धर्मशाला :– 20 सितम्बर को श्रीमान बलदेव सिंह जी और श्रीमान डाक्टर विनोद जी खेड़ा जी यहां पहुँचे। रात को यहां श्रीमान डोगरा जी के दोनों परिवारों को लेकर एक सभा की गई। सभा में बताया गया कि धर्म पाए बिना जन्म बर्बाद जाता है। किसी देवी देवता का नाम जपना, कीर्तन करना, आरती करना धर्म नहीं। धर्म अच्छे बनने का उच्च बनने का नाम है। उच्च कैसे बनते हैं, वह समझाया गया। परम पूजनीय भगवान देवात्मा के प्रभाव, उनकी शक्ति किस प्रकार नीच जनों को उच्च बनाते हैं। उसे सब विस्तार से बताया गया।

21 सितम्बर सुबह ईतवार की सभा की गई। श्रीमान वरिन्द्र जी डोगरा आकर शामिल हुए। इस सभा में बताया गया कि नेचर में जो चीज़ जैसी हैं, उसको वैसा ही देखना सौभाग्य है, इससे बरकतें आती है, उसको कुछ और देखना, इससे हानियां होती है। पर परम पूजनीय भगवान देवात्मा की जानने में ही हमारी भलाई है। जितना कोई उनको पहचानने के योग्य होता है। उतना ही वह उच्च बरकतों का भागी बनता है। हम धन, ज़मीन, मकान, दुकान, आमदन को तो पहचानते हैं, परन्तु धर्म, धर्म संगत जितनी अवश्यक है, उसे नहीं पहचानते, वह कितने कीमती है और इन्हें न पहचान कर कितनी हानियां होती हैं, यह नहीं जानते प्रत्येक मनुष्य रोगी है, वह अपने आपको रोगी

न देखकर, उसका ईलाज़ न करवा कर घाटे में रहता है, इस पक्ष में सम्भलने की आवश्यकता है।

रात को फिर एक सभा की गई। कांगड़ा मैडीकल कालिज के 100-125 विद्यार्थियों को पहले विनोद जी ने संबोधित किया। उसके बाद श्रीमान बलदेव सिंह जी ने सम्बोधित किया। इसमें बताया गया कि डाक्टर बनना सौभाग्य की चीज है। परन्तु उच्च वा नेक और सेवाकारी बनना और भी बड़ा सौभाग्य है। अपने आपको जाने बिना कोई जन उच्च वा महान नहीं बन सकता। उच्च वा भरोसे योग्य जीवन की अवश्यकता पर ज़ोर दिया। बहुत बड़े डाक्टरों ने नीच जीवन कारण मात खाई है, उससे बचे रहने के लिए उन्होंने उदाहरण पेश किए। सेवा मुख्य वा रूपये गौण देखने पर ज़ोर दिया। आधा पौना घण्टा नौजवान जो डाक्टर बनने वाले हैं, ध्यान पूर्वक सुनते रहे। फिर खेड़ा साहिब ने अपने अनुभव ब्यान किए। सब उपस्थित जनों को (तकरीबन 150) होटल में खाना खिलाया गया। स्थानीय सेवक, पोल से सत्यावान जी, लांजनी से परशोत्म शर्मा भी शमिल हुए।

चोल :- 22 सितम्बर सुबह तक सभा हुई। उसमें बताया गया कि प्रत्येक सुख अनुरागी मनुष्य अपने सम्बन्ध में अन्धधेरे में रहता है। परम पूजनीय भगवान देवात्मा की रोशनी अपनी नीचता को दिखाते हैं। श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी महाराजें ने किस प्रकार अपने अन्धेरे को देखा और महसूस किया। उनकी बानी पढ़कर, अपनी सूरत का पता लगता है। हम बेहद नीच हैं, हानि उठाते हैं। परन्तु हमें सब ठीक ठाक ही लगता है। साधन पाठ और हमारा अन्धेरा दूर करती है।

12 बजे फिर एक सभा की गई। इसमें भी परशोतम जी, आ गए। इस सभा में बताया गया कि हम अपने परिवर्तन को देख नहीं सकते। हम समझते हैं कि हम उन्नति कर रहे है, गुरू के निकट ही है, उच्च बनते जाते समझते हैं। जब कि न कोई नीच भाव करता है। और न उच्च भाव पैदा ही होता है। कृतज्ञता के भाव का होना धर्म प्राप्ति के लिए अवश्यक है। उसके ठोस लक्षण बताए गए और कृतज्ञ भाव धारियों की सुन्दर धटनाएं बताई गई।

एक बजे यह सभा समाप्त हुई। श्रीमान सत्यावान जी ने 200 रू., वरिन्द्र जी ने 500 रू० दान में दिए। 2 बजे वहां से चलकर कांगड़ा पहुंचे, वहां शारदा जी इन्तजार कर रही थी, उन्हें मिले। सब बहुत खुश हुए। सबने जल्दी आने के लिए प्रार्थना की। 9.30 बजे के करीब चण्डीगढ़ पहुंचे। इन तीन दिनों का प्रोग्राम सहायकारियों की सहायता से बहुत सफल रहा।

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए। (लाईफ़ वर्कर) मंत्री-देव-धर्म-मिशन। प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh - 160022*** *से छपवाकर म. नं. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts